om-10_Page 1 and 2 18-08-2014 10:03 Page 2

ओमशान्ति मीडिया

'25 अगस्त' स्मृति दिवस विशेषांक

वर्ष - 15 अंक - 10 अगस्त-II, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

समस्त मानवजाति को गौरवान्वित करती एक दिव्यआत्मा

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, रूपी नारे को आत्मासात कर सभी को इस पथ पर अग्रसर करने वाली एक ऐसी दिव्य आत्मा जिसकी अलौकिक दिव्य ज्योति के प्रकाश ने सभी को सत्य मार्ग पर लाकर जीवन की अन्यान्य संभावनाओं के द्वार खोले। सभी को संदेश में अपने दिव्य प्रकाश को बढ़ाने तथा निर्बाध गति से आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाली महा तपस्विनी जिनके प्रकम्पन से आज भी दुनिया प्रकम्पित हो रही है और जन-जन से एक ही प्रेरणा आ रही कि एक आप ही हमारे पालनहार हो। इस पालनहार की पालना का मूल्य चुकाने हेतु संस्था 25 अगस्त के दिन को 'विश्व बंधुत्व दिवस' के रुप में मनाकर उन्हें सच्ची श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहा है। ऐसे पालनहार को हम सभी आत्माओं का शत् शत् अभिवादन अभिनंदन....

भारत अध्यात्म-प्रधान देश है। इसके कण-कण में अध्यात्म की उज्जवल ज्योति बिखरती है। यहाँ की भूमि मानवीय विशेषताओं की रत्नगर्भा है। समय-समय पर विविधानेक भव्यात्माओं ने जन्म लेकर जीवन को सफल सार्थक तो किया ही है, उन्होंने अपने सम्पर्क में आने वाले अनन्य व्यक्तियों के जीवन को भी आलोकित किया है। उन्हें सत्य का रास्ता दिखाकर मानव जीवन की दुर्भावनाओं से परिचित कराया है। जिस प्रकार गुलाब का फूल कांटों में जनमता है। आध्यात्मिक व्यक्ति का जीवन भी कांटों के बीच खिला गुलाब है। गुलाब का काम है सुगंध फैलाना। गुलाब कांटो को अपने जीवन की बाधा नहीं मानता। वह कांटों के बारे में कुछ भी सोचता विचारता नहीं है।

गुलाब सदैव उर्ध्वमुखी होता है। वह ऊपर ही बढ़ता है। गुलाब को आपने देखा होगा, गुलाब कभी अधोमुखी नहीं होता है। आध्यात्मिक व्यक्ति भी उर्ध्वमुखी होता है। कांटे उपसर्गों और विशेषताओं के बीच से अपना पथ चुनते हैं। सौंदर्य और सुगंध उसका वैभव होता है। कोई उसे हार्दिकता से देखे-समझे या न देखे-समझे, उसका काम है अपनी विशेषताओं से विकसित होते रहना। आध्यात्मिकता, सौम्यता और भव्यता से भरा हुआ प्रकाश स्तंभ होता है। ऐसे सर्वांगीण सम्पन्न ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि तेजस्वी युगरत्न थीं। उनमें अलौकिक दिव्य ज्योति की अमर शिखा प्रज्वलित दिखाई देती थी। उन्होंने..-शेष पेज- 3 पर..